This question paper contains **4+1** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **563**

Unique Paper Code : **205255** **D**

Name of the Paper : **Madhyakalin Kavya (मध्यकालीन काव्य)**

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi Discipline Course**

Semester : **II**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित काव्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए :

(क) कबीर यहु घर प्रेम का, खाला का घर नाँहि।

सीस उतारै भुंइ धरै, सो पैसे घर माँहि।

सो साँई तन मैं बसै, भ्रम्यों न जाणै तास।

कस्तूरी के मृग ज्यूँ, फिरि फिरि सूँघै घास॥

अथवा

सत्त ईश कहुँ रूप है, सत्त सक्ति अत्त अपार।

'रैदास' सत्त के धारणा, देहहिं पाप निवार।

जंह अंध विश्वास है, सत्त परख तहं नांहि।

रैदास सत्त सोई जानि है, जो अनभउ होइ मन मांहि॥ 6

(ख) या लकुटि अरु कामरिया पर राज तिहूँ पुर को तजि डारौं।

आठहुँ सिद्धि नवो निधि को सुख नन्द की ग़ाइ चराइ बिसारौं॥

रसखानि कबौं इन आँखिन सों ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं।

कोटिक धौं कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं॥

अथवा

आँखि ही मेरी पै चेरी भई लखि फेरी फिरै न सुजान की घेरी।

रूप-छकी तित ही बिथकी, अब ऐसी अनेरी पत्यति न नेरी।

प्राण लै साथ परी पर-हाथ बिकानि की बानि पै कानि बखेरी।

पायनि पारि लई घनआनँद चायनि, बावरी प्रीति की बेरी॥ 6

2. दिए गए निर्देशों के आधार पर निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** काव्यांशों का रचना-कौशल (केवल 150 शब्दों में) स्पष्ट कीजिए :

(क) **निर्देश : समर्पण भाव**

हरि म्हारा जीवन प्राण अधार।

और आसिरो णा म्हारा थें विण, तीनूँ लोक मँझार।

थें विण म्हाणे जग णा सुहावाँ, निरख्याँ सब संसार।

मीरा रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो णेक णिहार॥

(ख) **निर्देश : संत-स्वभाव**

संत असंतन्हि कै असि करनी। जिमि कुठार चंदन आचरनी।

काटै परसु मलय सुनु भाई। निज गुन देइ सुगंध बसाई॥

तो तें सुर सीसन्ह चढ़त, जग वल्लभ श्रीखंड

अनल दाहि पीटत घनहि परसु बदनु येह दंड॥

(ग) **निर्देश : अन्योक्ति अलंकार**

मरतु प्यास पिंजरा-पर्‌यौ, सुआ समै कैं फेर।

आदरु दै दै बोलियतु, बाइसु बलि की बेर॥

(घ) **निर्देश : गंगा स्तुति**

करम को मूलन तन तनमूल जीव जग

जीवन को मूल अति आनंद उघरिबो।

कहै पद्माकर सु आनंद को मूल राज

राजमूल केवल प्रजा को भौन भरिबो।

प्रजामूल अन्न सब अन्न को मूल मेघ

मेघन को मूल एक जज्ञ अनुसरिबो।

जज्ञन को मूल धन धनमूल धर्म अरु

धर्ममूल गंगाजलबिंदु पान करिबो॥ 6

3. सूर **अथवा** तुलसी की भक्ति-भावना का विश्लेषण कीजिए। 12

4. जायसी के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा

मीरां के काव्य में विरह का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। 12

5. पद्माकर की भाषा पर विचार कीजिए।

अथवा

बिहारी के काव्य की विशेषताएँ बताइये। 11

6. संतकाव्य **अथवा** सूफीकाव्य की विशेषताओं का परिचय दीजिए। 8

7. आदिकाल **अथवा** रीतिकाल की सामान्य प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 8